

राम और सुग्रीव की मित्रता

वसंत ऋतु होने से वन में तरह-तरह के फूल खिल रहे थे। उन पर भौरें मंडरा रहे थे। आम पर कोयल कूकती थी, वन में मोर नाचते थे और सरोवरों में कमल खिले थे। सीता के न रहने पर राम को वन की यह शोभा बड़ा दुःख दे रही थी। अब वे ऋष्यमूक पर्वत की ओर बढ़े।

ऋष्यमूक पर्वत पर से सुग्रीव ने देखा कि दो धनुर्धर वीर पर्वत की ओर चलते आ रहे हैं। उसको शंका हुई कि कहीं बालि ही ने तो उन्हें नहीं भेजा। बालि उसका भाई था और उसे मार डालना चाहता था। बालि के भय से ही सुग्रीव इस पर्वत पर रहता था। मतंग ऋषि के शाप के कारण वह ऋष्यमूक पर नहीं आता था। सुग्रीव घबराया, फिर कुछ सोच-समझकर उसने हनुमान से पता लगाने के लिए कहा। हनुमान की बुद्धि और उनके बल पर सुग्रीव को बड़ा भरोसा था।

वेश बदलकर हनुमान राम-लक्ष्मण के पास गए। उन्होंने शिष्टता के साथ प्रणाम किया और संस्कृत भाषा में बातचीत की। रामचन्द्र जी से उन्होंने पूछा, “आप इस वन में क्यों घूम रहे हैं ? नर वेश में कोई देवता है कहीं के राजकुमार हैं ? अगर राजकुमार है, तो मुनियों का-सा वेश क्यों बना रखा है ? मैं पवन का पुत्र हनुमान हूँ और पंपापुर के राजा बालि के छोटे भाई सुग्रीव का सेवक हूँ। सुग्रीव बड़े धर्मात्मा और बुद्धिमान हैं। उन्होंने मुझे यहां भेजा है। आप से मिलकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता होगी।

राम ने हनुमान की बात सुनकर समझ लिया कि वे बड़े अच्छे पंडित हैं। उनके मुंह से एक भी अशुद्ध या निरर्थक शब्द नहीं निकला। बोलते समय चेहरे पर कोई विकार नहीं दिखाई पड़ा। जिनके ये मंत्री हैं वे भी ऐसे ही होंगे। लक्ष्मण बोले- “हे हनुमान! ये कौशल देश के राजा दशरथ के सबसे बड़े पुत्र राम हैं। मैं इनका छोटा भाई लक्ष्मण हूँ। पिता की आज्ञा हम चौदह वर्ष के लिए रहने के लिए निकले हैं। साथ में भाई राम की धर्मपत्नी राजा जनक की पुत्री सीताजी भी थी। पंचवटी के आश्रम से कोई दुष्ट राक्षस उन्हें उठा ले गया है। उन्हीं को हम खोज रहे हैं। कबंध ने सुग्रीव की प्रशंसा की थी। उनकी सहायता मिल जाए तो काम बने।”

हनुमान ने समझ लिया कि राम और सुग्रीव दोनों की दशा समान है। दोनों को एक-दूसरे की मदद चाहिए। इसलिए दोनों में मित्रता हो सकती है। यह सोचकर राम-लक्ष्मण को उन्होंने अपने कंधों पर बैठाया और उछलते-कूदते और छलांग भरते वे ऋष्यमूक पर्वत के शिखर पर जा पहुँचे। हनुमान ने सुग्रीव को राम का सारा हाल बताया और राम को सुग्रीव का। फिर आग को साक्षी करके दोनों की मित्रता कराई। राम ने कहा कि हम अग्निदेव के सामने प्रतिज्ञा करते हैं कि आज से तुम हमारे मित्र हुए। तुम्हारे सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख मानेंगे। उपकार करना मित्र का लक्षण है और अपकार करना शत्रु का। सुग्रीव ने भी ऐसी ही शपथ ली।

राम और सुग्रीव में बातें होने लगीं। हनुमान ने चंदन की एक फूली हुई टहनी लक्ष्मण को दी। सुग्रीव ने सीता की खोज कराने का आश्वासन दिया और फिर सीताजी के गहनों की पोटली लाकर दिखाई। राम ने उन्हें तुरन्त पहचान लिया। लक्ष्मण से भी उन्होंने पूछा। लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि कानों के कुंडल और

बाजूबंद के बारे में तो कुछ नहीं कह सकता, नूपुरों को अवश्य पहचानता हूँ कि वे सीता-माता के ही हैं। नित्य सबेरे चरण छूते उन्हें मैं देखता था।

आभूषणों को देखकर राम शोक सागर में डूब गए। तब सुग्रीव ने उनको धीरज बंधाया और कहा कि मैं हर प्रकार से आप की सहायता करूँगा। सीताजी अवश्य मिलेंगी। विपत्ति में सहायता देने वाला ही सच्चा मित्र होता है। मित्रता करना सहज है, पर उसे निभाना कठिन है। तब राम ने सुग्रीव से अपना हाल बताने के लिए कहा। सुग्रीव ने कहा, किष्किंधा का राजा महाबलवान बालि मेरा बड़ा भाई है। उसने मुझे राज्य से निकाल दिया है। मेरी स्त्री छीन ली। मेरा वध करने की बराबर चेष्टा कर रहा है। उससे बचने के लिए मैंने पृथ्वी का कोना-कोना छान डाला हनुमान, नल और नील मेरे सच्चे साथी हैं। घोर विपत्ति में भी इन्होंने मुझे नहीं छोड़ा। सुग्रीव की कहानी सुनकर श्री राम कि मैं बालि को एक ही बाण से मार डालूँगा। तुम्हें अपनी स्त्री भी मिलेगी और राज्य भी मिलेगा।



नव हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ।
पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाई॥

फिर भी सुग्रीव को भरोसा नहीं हुआ वह बोला, “हे रघुवीर! बालि महाबलशाली है। पर्वतों को उखाड़ कर वह गेंद की तरह फेंक देता है, बड़े-बड़े वृक्षों को एक ही धक्के से गिरा देता है। महाभीषण दुँदुभी राक्षस को उसने बात ही बात में मार डाला था।

सामने खड़े सात साल के वृक्षों को बालि एक साथ झकझोर कर पत्ता पत्ता गिरा देता था। जो पुरुष एक ही बाण से सभी वृक्षों को काट देगा, वहीं बालि वध में समर्थ हो सकता है। राम ने एक दिव्य बाण

द्वारा सातों शाल-वृक्षों को काट गिराया। सुग्रीव चकित हो गया और हाथ जोड़कर बोला कि आपके हाथों बालि मारा जा सकता है। मुझे आपके बल पर भरोसा हो गया।

राम ने कहा, “अब देर मत करो। चल कर बालि को युद्ध के लिए ललकारों। मैं पेड़ों की आड़ से छिपकर तुम्हारा युद्ध देखूंगा और अवसर पाते ही बालि पर बाण छोड़ दूंगा।

बालि वध

युद्ध के लिए तैयार होकर सुग्रीव किष्किंधा नगरी पहुँचा और बालि को ललकारने लगा। सुग्रीव को देखकर बालि क्रोध से उसकी ओर झपटा। भयंकर मल्ल युद्ध होने लगा। बालि की मार खाकर सुग्रीव किसी तरह प्राण लेकर भागा। बालि ने कुछ दूर तक पीछा भी किया तुरंत वह ऋष्यमूक पर्वत के निकट पहुँच गया। तब बालि लौट आया। राम धनुष पर बाण चढ़ाये देखते ही रह गए।

थोड़ी देर बाद राम भी सुग्रीव के पास पहुँच गए। राम को देखकर सुग्रीव को क्रोध आया। वह बोला— “मुझे आपने बड़ा धोखा दिया। यदि बालि को नहीं मारना था, तो मुझे भेजा ही क्यों। देखते नहीं मेरी उसने नस-नस तोड़ दी है। सारे शरीर में भयंकर पीड़ा हो रही है। यदि भाग न आता तो वह मुझे मार ही डालता।” राम ने अपनी कठिनाई बताई, “तुम दोनों भाई शवल सूरत में इतने मिलते जुलते हो कि मैं बालि को निश्चयपूर्वक नहीं पहचान सका। धोखे में यदि बाण तुम्हें लग जाता तो बड़ा अनर्थ होता।” इतना कहकर राम ने सुग्रीव के शरीर पर हाथ फेरा। उसकी सब पीड़ा जाती रही। उसकी देह वज्र की तरह कठोर हो गई।

राम ने सुग्रीव के गले में नागपुष्पी की लता, माला की तरह पहना दी और सुग्रीव से कहा कि अब युद्ध के लिए जाओ। सुग्रीव बहुत डरा हुआ था। परंतु राम के अनुरोध करने पर वह चला गया और नगर के द्वार पर पहुँच कर सिंह की भाँति गरजने लगा। बालि अन्तःपुर में था। सुग्रीव की आवाज सुनकर वह पैर पटकता हुआ दौड़ा। बालि की स्त्री तारा बड़ी बुद्धिमती थी। उसने सोचा कि अभी-अभी सुग्रीव हार कर भागा है। इतनी जल्दी फिर कैसे ललकार रहा है। जरूर कोई न कोई बलवान योद्धा उसके पीछे है। इसलिए उसने बालि को जाने से रोका और कहा कि मैंने अंगद से सुना है कि अयोध्या के दो वीर राजकुमार इधर आए हैं। कौन जाने सुग्रीव से उनकी मित्रता हो गई हो। आप इस समय न जाएं। मेरा मन कुछ ऐसा ही हो रहा है। गुप्तचरों से सही बात पता लगा लें। अगर मेरा अनुमान सही हो तो आप भी राम से मिल लें। वे वीर और धर्मात्मा है, फिर सुग्रीव भी आपका छोटा भाई ही तो है उसे युवराज बनाकर अपना लें।

बालि ने तारा को डांट दिया और कहा, “सुग्रीव भाई नहीं वैरी है। वैरी की ललकार मैं नहीं सह सकता। फिर तूने ही कहा कि राम धर्मात्मा है। वे अकारण मुझे क्यों मारेंगे। इतना वचन मैं तुझे भी देता हूँ कि मैं सुग्रीव को जान से नहीं मारूंगा। बस उसका अंहकार चूर करके छोड़ दूंगा।”

बालि ने झपट कर सुग्रीव को एक घूँसा मारा। उसके मुँह से रक्त निकलने लगा। वह संभलकर फिर युद्ध करने लगा। चपेटों की आवाज तडातड़ होने लगी। धीरे-धीरे सुग्रीव का बल क्षीण होने लगा। सुग्रीव को व्याकुल देखकर राम ने एक कठोर बाण बालि को लक्ष्य बनाकर छोड़ दिया। बालि का सीना फट गया और वह पृथ्वी पर गिर पड़ा।

बालि के गिरते ही सुग्रीव के सभी साथी प्रकट हो गए। बालि ने देखा कि सामने धनुष चढ़ाए राम खड़े हैं। बालि ने उनसे प्रश्न किए, “मैंने आपका क्या बिगाड़ा था? न तो मैंने आपका अपमान किया और

न आपके राज्य पर चढ़ाई ही की। आपने यह अधर्म क्यों किया। मुझे तो आप कपट वेशधारी छलिया कहते हैं। संसार को आप क्या जवाब दोगे। लड़ना ही था तो सामने आकर लड़ते। रही सुग्रीव से मित्रता की बात, यदि मुझसे कहते तो मैं एक ही दिन में रावण और मंदोदरी समेत सीताजी को लाकर आपको दे देता। बालि पीड़ा से बेचैन था। अधिक न बोल सका।

राम को बालि की बातों पर रोष-सा आया। वे बोले- “बालि जिस धर्म की तुम दुहाई देते हो मेरा काम उसी के अनुसार हुआ है। तुमने अपने छोटे भाई की स्त्री को उसके जीते-जी अपने घर में रख लिया है। उसकी पत्नी रूमा तुम्हारे बेटी के समान है। तुम्हें मारकर मैंने धर्म की रक्षा की है और मित्र की सहायता की है। तुम्हारे काम पशुओं जैसे थे। पशु को आड़ में से मारने में कोई दोष नहीं।

बालि ने राम से हाथ जोड़कर क्षमा मांगी और कहा मुझे स्त्री हरण का दंड मिल गया। अपने लिए मुझे कोई चिंता नहीं। मेरी स्त्री तारा अनाथ हो गई है और मेरा इकलौता बेटा अंगद भी अनाथ हो गया। इन पर कृपा कीजिए। राम ने सुग्रीव के सामने ही बालि को आश्वासन दिया। तभी तारा भी रोती-रोती आई और पति से लिपटकर विलाप करने लगी। बालि ने एक बार आंख खोली और सुग्रीव को इशारे से अपने पास बुलाया और धीरे से कहा- “सुग्रीव मैं सदा के लिए जा रहा हूँ। पिछली बातों को भूल जाओ। सब भाग्य का खेल था। किष्किंधा का राज मैं तुम्हें खुशी से देता हूँ। अंगद के अब तुम्हीं पिता हो। जानते हो वह कितने लाड़ प्यार से पला है। तारा के सुख-सम्मान का ध्यान रखना। राम के काम में किसी प्रकार की ढील न करना।” इतना कहकर बालि ने अपने गले की माला उतार कर सुग्रीव के गले में डाल दी। अंगद को बुलाकर उससे कहा, “तुम किसी से न अधिक बैर न अधिक प्रेम रखना। दोनों महान दोष हैं। बीच का रास्ता अच्छा होता है।” इतना कहते-कहते बालि की आंखें बंद हो गईं।

भाई के बल पौरुष को याद कर सुग्रीव भी रोने लगा। राम ने तारा सुग्रीव और अंगद सबको समझा-बुझाकर धीरज बंधाया। सुग्रीव ने विधिपूर्वक बालि की अन्त्येष्टि की। सुग्रीव सहित सब वानर राम के पास लौट कर आ गए। राम ने सुग्रीव से कहा- “वानरराज! अब नगर में जाकर अपना राजतिलक कराओ और अंगद को अपना युवराज बनाओ। अब वर्षा ऋतु आ गई है। मैं प्रस्रवण पहाड़ पर रहूंगा। वर्षा समाप्त होते ही आ जाओ और सीता की खोज में लग जाओ। सुग्रीव बोला- “जैसी आपकी आज्ञा होगी वैसा निश्चय ही करूंगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि वर्षा समाप्त होते ही सीता की खोज में निकल जायेंगे।”

वानरों द्वारा सीता की खोज

सबसे विदा लेकर सुग्रीव किष्किंधा नगर में चले गए। वर्षा काल बिताने के लिए राम प्रस्रवण की सुन्दर गुफा में रहने लगे। वर्षा ऋतु राम को बड़ी दुखदायी हो रही थी। कभी वे लक्ष्मण से कहते- सुग्रीव को तो स्त्री सुख भी हो गया और राज्य भी मिल गया। वह कितना सुखी है। मुझे पहले राज्य लक्ष्मी ने छोड़ दिया फिर वन में आकर स्त्री ने। कहां जाऊँ! क्या करूँ।

उधर सुग्रीव ने बालि की स्त्री तारा से विवाह कर लिया। भोग-विलास और मदिरा पान में वह डूब गया और राम को दिया अपना वचन बिल्कुल भूल गया। जब वर्षा ऋतु समाप्त हो गई तो हनुमान ने सुग्रीव को अपने कर्तव्य की याद दिलाई। सेनापति नील को बुलाकर सुग्रीव ने आज्ञा दी कि पंद्रह दिन के भीतर सब वानर राजधानी में आ जाएं। नील ने सभी दिशाओं में दूत भेजे। सुग्रीव फिर भोग-विलास में रम गया। इधर शरद ऋतु आने पर सुग्रीव राम के पास नहीं आया तो उन्हें बड़ा क्रोध हुआ। उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि राजमद में डूबकर मालूम होता है कि सुग्रीव मेरा काम भूल गया है। किष्किंधा जाकर उससे साफ कह

दो कि यमलोक का दरवाजा बंद नहीं हुआ। जिस रास्ते बालि गया है उसी से उसको भेज दूँगा। इतना सुनकर लक्ष्मण आग बबूला हो गए और धनुष बाण लेकर चल दिए। लक्ष्मण को बड़े क्रोध में देखकर राम ने कहा - “डरा धमका कर और समझा-बुझाकर काम निकालना है। आखिर सुग्रीव हमारा मित्र ही तो है और उससे सहायता लेनी है।”

किष्किंधा पहुँचकर लक्ष्मण ने धनुष की टंकार की तो सुग्रीव भयभीत हो गया। लक्ष्मण के सामने आने का उसको साहस नहीं हुआ। तारा ने बुद्धिमानी से उनका क्रोध शांत किया। वह लक्ष्मण को अन्तःपुर में ले गई और उचित आदर सत्कार किया। सुग्रीव ने हनुमान को बुलाकर कहा - “फिर दूत भेजो। सब वानरों को बुलाओ। जो दस दिन के भीतर नहीं आ जाएगा, उसे कठोर दंड मिलेगा।” इसके बाद लक्ष्मण के साथ सोने की पालकी में बैठकर वह राम से मिलने गया। राम के चरणों में गिरकर उसने क्षमा मांगी। राम ने बड़े स्नेह से उसे गले लगा लिया।

राम और सुग्रीव में बातें हो रही थीं कि वानर - भालुओं की टोलियां आ पहुँची। नल, नील अंगद और हनुमान के साथ लाखों वानर - प्रस्रवण पर्वत पर आ गए। जामवंत के पीछे-पीछे भालुओं की बड़ी भारी भीड़ थी। वानर भालुओं को देखकर राम बड़े प्रसन्न हुए। राम ने सुग्रीव से कहा, “भाई! पहले तो यह पता लगाना है कि सीता जीवित है अथवा नहीं। यदि जीवित है तो किस स्थिति में है?”

सुग्रीव ने वानर दल को चार भागों में बांटा। प्रत्येक दल का एक नायक बना दिया। सुग्रीव ने उन्हें नगरों, द्वीपों और वनों का पूरा विवरण भी बता दिया। उसने हनुमान, नल, नील आदि चुने हुए वानरों को अंगद के नेतृत्व में दक्षिण की ओर भेजा। हनुमान को पास बुलाकर राम ने अपने हाथ की अंगूठी दी और कहा कि मेरी निशानी देखकर सीता समझ जाएगी कि तुमको मैंने भेजा है। उसका हाल लेकर मेरा दुःख भी उसे सुनाना।

सुग्रीव ने सबसे कहा, “वीरो, जैसे भी हो सके सीताजी का पता लगाओ। इस काम के लिए एक महीने का समय दिया जा रहा है। बिना समाचार लिए जो एक महीने बाद लौटेगा, उसे मृत्यु दंड मिलेगा। “राजा सुग्रीव की जय! महाराजा रामचन्द्र की जय!” नारे लगाते हुए वानर-वीर अपनी-अपनी दिशाओं में चल पड़े।

पूर्व, पश्चिम और उत्तर की ओर गए दल निराश होकर महीने के भीतर लौट आए। दक्षिण का दल वनों, पर्वतों और कंदराओं को खोजता हुआ समुद्र तक जा पहुँचा। अब कहां जाएं! सामने अथाह सागर गरज रहा था। किष्किंधा से चले कई महीने हो गए थे। यदि यों ही लौटे तो सुग्रीव के हाथों मृत्यु निश्चित है। अब न आगे जा सकते हैं न पीछे।

तभी उन्होंने पर्वत की चोटी पर एक बड़ा भंयकर गिद्ध देखा। वह जटायु का बड़ा भाई सम्पाति था। वानर उसे देखकर डर गए और वह समझे कि निश्चित ही वह हमें खा जाएगा। हनुमान ने बुद्धि से काम लिया। वे बोले, “आपसे अच्छा तो जटायु ही था जो राम का कुछ काम करके तो मरा।” जटायु का नाम सुनकर संपाति बोला, “वानरों! घबराओ मत। अपना परिचय दो और कृपा करके यह बताओ कि जटायु कब और कैसे मरा, वह मेरा छोटा भाई था।” अंगद ने सारा हाल कह सुनाया। उसे सुनकर संपाति बोला, “मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ। नहीं तो तुम्हारी सहायता करके रावण से अपने भाई की मृत्यु का बदला लेता। कुछ महीने पहले मैंने देखा था कि रावण एक स्त्री को लिए जा रहा है। वह है राम! हे लक्ष्मण! कहकर रोती जा रही थी।

“वह सीता ही होगी। समुद्र के किनारे तुम लोग दक्षिण तक चले जाओ वहां से सौ योजन लंबे समुद्र को यदि कोई पार कर सकेगा तो वह सीता से मिल सकता है। वानर दक्षिणी तट तक जा पहुंचे। अब लंका पहुंचने की योजना पर विचार होने लगा। कोई भी वानर आगे नहीं आ रहा था। अंगद बड़े उदास हो गए। तब जामवंत ने हनुमान से कहा, “वीर! तुम तो पवन पुत्र हो। कैसे चुप बैठे हो? उठो! सबकी आंखें तुम्हारी ओर लगी हैं।”

इतना सुनना था कि हनुमान सिंह की तरह अंगड़ाई लेकर उठे। सोने के पहाड़ की तरह उनका शरीर हो गया। उन्होंने हाथ जोड़कर जाने की आज्ञा मांगी। सबने उनको शुभ कामनाएं देकर विदा किया और कहा कि हनुमान हमारा जीवन भी तुम्हारे ही हाथ में है।

एक छलांक में हनुमान महेन्द्र पर्वत पर जा खड़े हुए।

प्रश्न

1. राम और सुग्रीव की मित्रता किस प्रकार हुई? इस प्रसंग में सच्चे मित्र के क्या लक्षण बताए गए हैं?
2. राम द्वारा बालि के मारे जाने को बालि ने अधर्म का काम बताया है और राम ने उसे ठीक बताया है। तुम अपनी राय दो और पुष्टि में कारण बताओ।
3. वानरों द्वारा सीता की खोज का वर्णन करो।
4. संपाति कौन था? उसने वानरों की क्या मदद की?